International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-11-2022, Accepted: 13-12-2022, Published: 30-12-2022
Volume 8, Issue 6, 2022, Page No. 30-31

परमारों का कला एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान

डॉ. कविता शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग), एस. बी. डी. राजकीय महाविद्यालय, सरदारशहर, राजस्थान, भारत

सारांश
मध्यकालीन भारतीय इतिहास में उत्तर भारत में विभिन्न राजवंशो ने शासन किया। गुर्जर–प्रतिहार, पाल, चाहमान और परमार। इनमें परमार राजवंश जिसने मध्य भारत में अपना शासन स्थापित कर अपने साम्राज्य की कीर्ति को विस्तार दिया। विशेष बात सह रही है की यह कीर्ति केवल साम्राज्य विस्तार तक ही सीमित नहीं रही बल्कि उससे बढ़कर कला एवं संस्कृति तक इसका विस्तार हुआ। परमारों ने कला एवं साहित्य के क्षेत्र में बढोतरी कर व अपने साकाम को इतिहास के सुनहरो अक्षरों में अपना नाम अंकित करवा दिया। इस समय के प्रसिद्ध कवि एवं विद्वान पद्मगुप्त ने अपने ग्रन्थ नवसाहसांकचरित में परमार वंश की संस्कृति को प्रस्तुत किया। मुंज, सिन्धुराज और भोज जैसे प्रसिद्ध शासकों ने अपनी विचारधारा से परमार वंश को कला एवं साहित्य के क्षेत्र उन्नति के शिक्षर पर पहुँचा दिया।

मूल शब्दः परमारों, राजवंश, शासन

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में उत्तर भारत में विभिन्न राजवंशो ने शासन किया। गुर्जर–प्रतिहार, पाल, चाहमान और परमार। इनमें परमार राजवंश जिसने मध्य भारत में अपना शासन स्थापित कर अपने साम्राज्य की कीर्ति को विस्तार दिया। विशेष बात सह रही है की यह कीर्ति केवल साम्राज्य विस्तार तक ही सीमित नहीं रही बल्कि उससे बढ़कर कला एवं संस्कृति तक इसका विस्तार हुआ। परमारों ने कला एवं साहित्य के क्षेत्र में बढोतरी कर व अपने साकाम को इतिहास के सुनहरो अक्षरों में अपना नाम अंकित करवा दिया। इस समय के प्रसिद्ध कवि एवं विद्वान पद्मगुप्त ने अपने ग्रन्थ नवसाहसांकचरित में परमार वंश की संस्कृति को प्रस्तुत किया। मुंज, सिन्धुराज और भोज जैसे प्रसिद्ध शासकों ने अपनी विचारधारा से परमार वंश को कला एवं साहित्य के क्षेत्र उन्नति के शिक्षर पर पहुँचा दिया।

1. कला के क्षेत्र में परमारों का योगदान

परमार वंश का शासक वाक्पति मुँज जिसने अपने राज्य में मुंजसागर नामक तालाब बनवाया तथा गुजरात में मुंजपुर नामक एक नवीन की स्थापना की। उज्जैन, धर्मपुरी, माहेष्वर में उसने कई मन्दिरों का निर्माण करवाया। मुँज के पश्चात परमास शासक सिन्धुराज ने शासन किया। उसके बाद इस वश के सबसे प्रसिद्ध एवं शक्तिशाली शासक ने शासन किया जिसका नाम भोज परमार था। इसके समय परमारों का स्वर्णयुग था। इसने राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों से परमार राज्य की उन्नति हुई। कला की दृष्टि से इस समय यह अद्भूत समय रहा था। धारा नगरी अनेक महलों ओर मन्दिरों से परिपूर्ण हो गई। उसकी स्थापना कला का अद्भूत नमूना धारा नगरी में स्थापित सरस्वती मन्दिर था। यह सरस्वती मन्दिर स्थापत्य एवं साहित्य दोनों की दृष्टि से महत्वपूर्ण था। इसमें उसने एक संस्कृत विद्यालय की स्थापना करवायी। वास्तुकला से सम्बन्धित भोज के दो प्रमुख ग्रन्थ युक्तिकल्पतः एवं समरांगणसूत्रधार थे।

इसके अतिरिक्त भोज ने भोपाल के दक्षिण–पूर्व में 250 वर्ग मील लम्बी एक झील का निर्माण करवाया था जो वर्तमान में भी भोजसर के नाम से प्रसिद्ध है। यह झील परमारकालीन तकनीकी का अद्भूत नमूना है। भोज ने राजपूताना के क्षेत्र में चितौङ में त्रिभुवन नारायण का मन्दिर भी बनवाया था।

इस प्रकार परमारों ने कला के क्षेत्र में विभिन्न मन्दिर एवं जलाशायों का निर्माण करवाकर अपनी स्थापत्य कला का प्रदर्षन किया जिससे आम जनता को भी लाभ हुआ।

2. साहित्य के क्षेत्र में परमारों का योगदान

परमारों ने कला के साथ–साथ साहित्य के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किया। जिस प्रकार परमारों की कला संसार के सम्मुख प्रसिद्ध हुई। उससे अधिक उनके साहित्य ने उनको प्रसिद्धि दिलायी। वाक्पति मुँज जो स्वयं भी विद्वान था उसकी राज्य सभा में पद्मगुप्त, धनञजय, धनिक, हलायुध, अमितगति जैसे विद्वान उसकी राजसभा को सुषोभित करते थे। मुँज ने स्वयं श्रीवल्लभ, पृथ्वीवल्लभ, अमोधवर्ष जैसी उपाधियाँ धारण कर रखी थी।

मुँज के पश्चात भोज परमार ने साहित्य को अपने साम्राज्य में पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया। ज्योतिष एवं काव्यशास्त्र पर उच्च स्तर के साहित्य की रचना हुई। जिसमें

सरस्वतीकण्णभरण, श्रृंगारप्रकाश, प्राकृतव्याकरण, कूर्मशतक, श्रृंगारमंजरी, भोजचम्पू, युक्तिकल्पतः, समरांगणसूत्रधार, तत्वप्रकाश, शब्दानुशासन, राजमृगांक आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

निष्कर्ष

इस प्रकार परमार राजवंश के समय मध्य भारत में कला साहित्य एवं स्थापत्य के क्षेत्र में अत्याधिक विकास हुआ। सिंधुराज से लेकर मुँज तथा भोजराज के समय तो हर क्षेत्र में परमार संस्कृति पुष्पित–पल्लवित हुई। मुस्लिम आक्रमण के समय में भी परमार संस्कृति ने अपने आपको सुरक्षित रखा।

संदर्भ सूची

1. डॉ. वी.एस. पाठक (उत्तर भारत का राजनैतिक इतिहास, 600–1200 ई•)
2. विश्वैश्वरनाथ रेउ, (राजा भोज इलाहाबाद हिन्दुस्तान एकेडमी)
3. के.सी. श्रीवास्तव (प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति)